KOLORS
make life better

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

कक्षा - 12

भारतीय इतिहास के कुछ विषय

अध्याय - 2

राजा, किसान और नगर
(आरंभिक राज्य और अर्थव्यवस्थाएं)

भाग - 7

Pritesh Joshi

KOLORS
make life better

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

सिक्के और राजा :

व्यापार के लिए सिक्के के प्रचलन से विनिमय कुछ हद तक आसान हो गया था।

चाँदी और ताँबे के आहत सिक्के (छठी शताब्दी ई.पू.) सबसे पहले ढाले गए और प्रयोग में आए। पूरे उपमहाद्वीप में खुदाई के दौरान इस प्रकार के सिक्के मिले हैं।

आहत सिक्के – धातु के टुकड़े पर चिन्ह विशेष ठप्पा मारकर बनाये जाते थे। इन पर प्रतीकों को आहत किया जाता था।



आहत शब्द से ही स्पष्ट है कि इन सिक्कों पर प्रतीकों को आहत कर उन्हें बनाया जाता था

KOLORS
make life better

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

मैं हूँ मुद्राशास्त्री



मुद्राशास्त्रियों ने इनका और अन्य सिक्कों का अध्ययन करके उनके वाणिज्यिक प्रयोग के संभावित क्षेत्रों का पता लगाया है।

मुद्राशास्त्र – इसमें सिक्कों का अध्ययन होता है। इसके साथ ही उन पर पाये जाने वाले चित्र लिपि आदि तथा उनकी धातु का विश्लेषण और जिन संदर्भ में इन सिक्कों को पाया गया है। उनका अध्ययन भी इसमें आता है।

आहत सिक्के पर बने प्रतीकों को उन विशेष मौर्य वंश जैसे राजवंशों के प्रतीकों से मिलाकर पहचान करने की कोशिश की गई तो पता चला कि इन सिक्कों को राजाओं ने जारी किया था।

KOLORS
make life better

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

राजा

- यह भी संभव है कि व्यापारियों, धनपतियों और नागरिकों ने इस प्रकार के कुछ सिक्के जारी किए हों।
- शासकों की प्रतिमा और नाम के साथ सबसे पहले सिक्के हिंदु–यूनानी शासकों ने जारी किए थे जिन्होंने द्वितीय शताब्दी ई.पू. में उपमहाद्वीप के उत्तर–पश्चिमी क्षेत्र पर नियंत्रण स्थापित किया था।

KOLORS
make life better

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

सोने के सिक्के बड़े पैमाने पर प्रथम शताब्दी ई में कुषाण राजाओं ने जारी किए थे। इनके आकार और वजन तत्कालीन रोमन सम्राटों तथा ईरान के पार्थियन शासकों द्वारा जारी सिक्कों के बिल्कुल समान थे। उत्तर और मध्य भारत के कई पुरास्थलों पर ऐसे सिक्के मिले हैं।

सोने के सिक्कों के व्यापक प्रयोग से संकेत मिलता है कि बहुमूल्य वस्तुओं और भारी मात्रा में वस्तुओं का विनिमय किया जाता था।

KOLORS
make life better

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

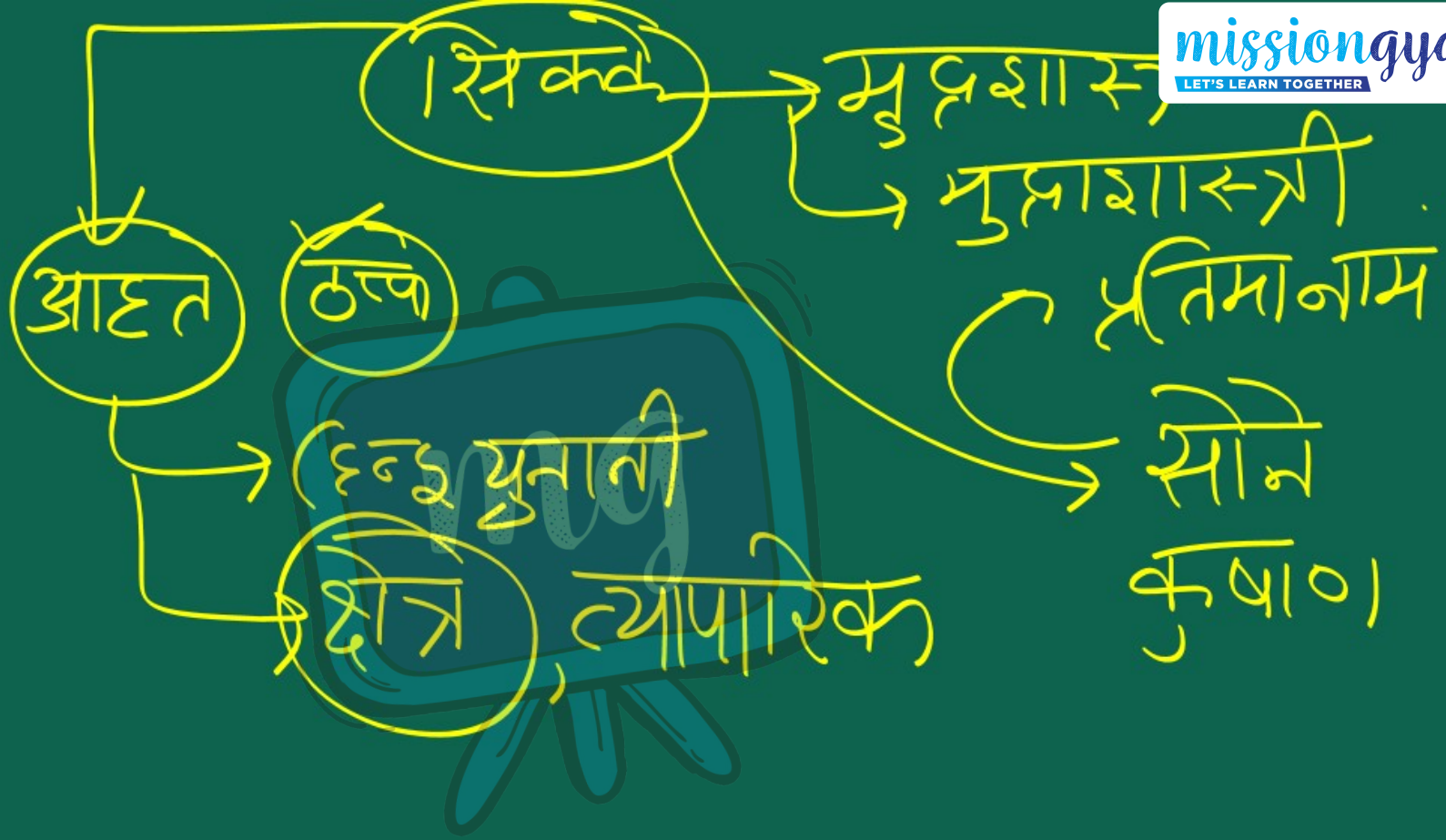

KOLORS
make life better

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

- दक्षिण भारत के अनेक पुरास्थलों से बड़ी संख्या में रोमन सिक्के मिले हैं जिनसे यह स्पष्ट है कि व्यापारिक तंत्र राजनीतिक सीमाओं से बँधा नहीं था क्योंकि दक्षिण भारत रोमन साम्राज्य के अंतर्गत न होते हुए भी व्यापारिक दृष्टि से रोमन साम्राज्य से संबंधित था।
- पंजाब और हरियाणा जैसे क्षेत्रों के यौधेय कबायली गणराज्यों (प्रथम शताब्दी ई.) ने सिक्के जारी किए थे। पुराविदों को इन शासकों द्वारा जारी ताँबे के सिक्के हजारों की संख्या में मिले हैं जो यौधेयों की व्यापार में रुचि और सहभागिता परिलक्षित होती है।



एक यौधेय सिक्का

KOLORS
make life better

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



KOLORS
make life better

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

सोने के भव्य सिक्कों में से कुछ गुप्त शासकों ने जारी किए। इनके आरंभिक सिक्कों में प्रयुक्त सोना अति उत्तम था। इन सिक्कों के माध्यम से दूर देशों से व्यापार-विनिमय करने में आसानी होती थी जिससे शासकों को भी लाभ होता था।



एक गुप्त सिक्का

KOLORS
make life better

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

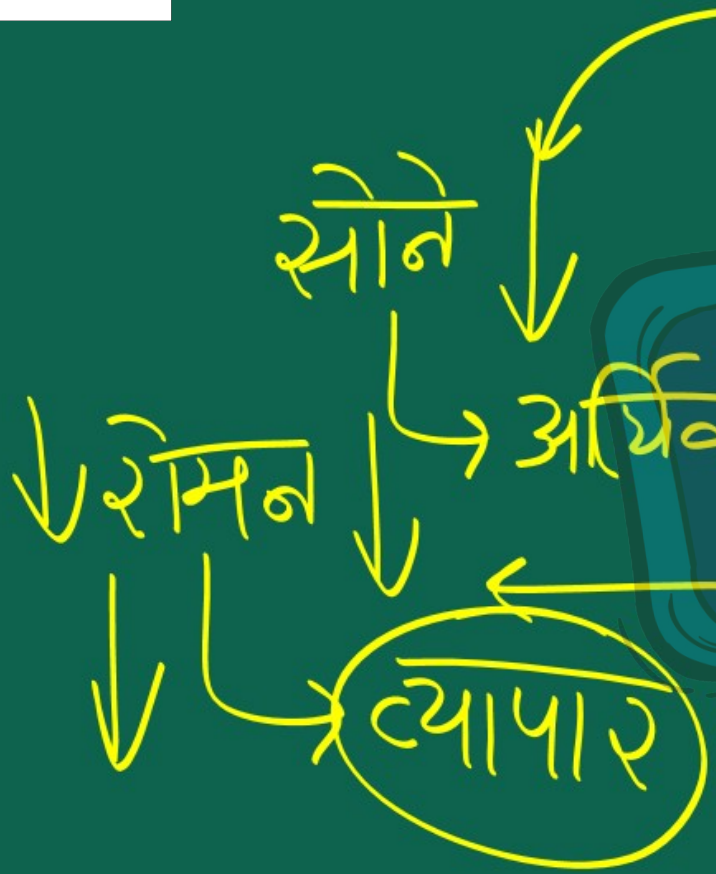

छठी शताब्दी ई. से सोने के सिक्के मिलने कम हो गए। संभवतः उस काल में कुछ आर्थिक संकट पैदा हो गया हो।

कुछ का मानना है कि रोमन साम्राज्य के पतन के बाद दूरवर्ती व्यापार में कमी आई जिससे उन राज्यों, समुदायों और क्षेत्रों की संपन्नता पर असर पड़ा जिन्हें दूरवर्ती व्यापार से लाभ मिलता था।

अन्य का कहना है, कि नगरों के साथ–साथ व्यापार के नवीन तंत्रों का उदय होने लगा था।

KOLORS
make life better

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

- इसके बाद भी अभिलेखों और ग्रंथों में सिक्के का उल्लेख होना दर्शाता है कि सिक्के मिलने कम इसलिए हो गये है कि वो प्रचलन में तो थे परन्तु उनका किसी ने संग्रह करके नहीं रखा था।

KOLORS
make life better

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

Q. सिक्को से हमे इतिहास की क्या जानकारी प्राप्त होती है?

Q. मुद्राशास्त्र क्या है?

Q. आहत सिक्के किसे कहते है?

Q. गुप्त काल के बाद सोने के सिक्को का प्रचलन कम क्यो हुआ?

KOLORS
make life better

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

Q. प्राचीन काल मे हम सिक्को से राजाओ राज्य के बारे मे जानकारी कैसे प्राप्त कर सकते है ?

95%

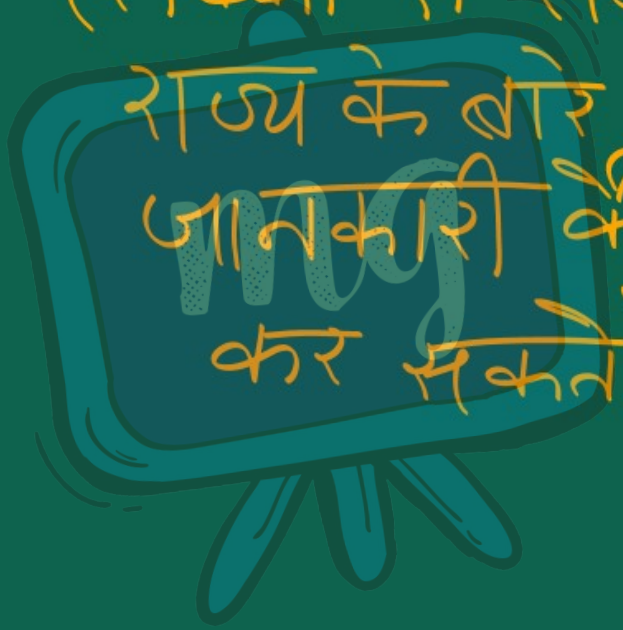

KOLORS
make life better

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

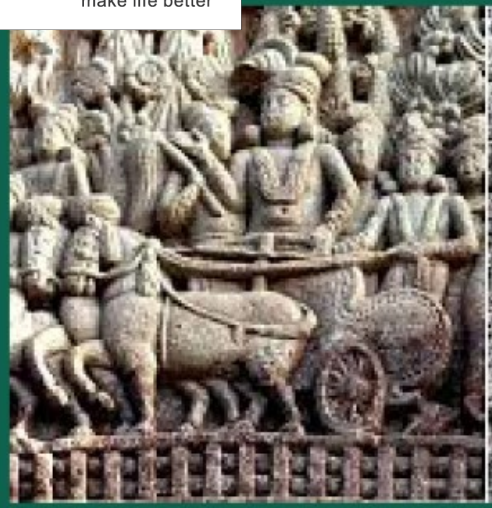

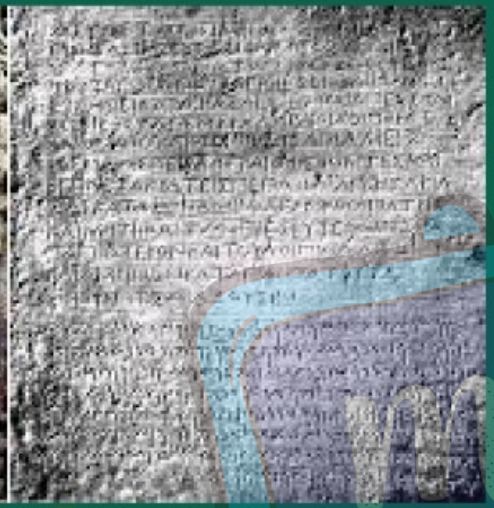

अ अ

अभिलेखों का अर्थ कैसे निकाला जाता है?

ब्राह्मी लिपि द्वारा खरोष्ठी लिपि का अध्ययन कर अभिलेखों का अर्थ निकाला गया।



असोक का एक अभिलेख

KOLORS
make life better

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

ब्राह्मी लिपि का अध्ययन –

- आधुनिक भारतीय भाषाओं में प्रयुक्त लगभग सभी लिपियों का मूल ब्राह्मी लिपि है।
- ब्राह्मी लिपि का प्रयोग असोक के अभिलेखों में किया गया है।

𑀓	क
𑀘	च
𑀝	ढ
𑀤	द
𑀫	म
𑀭	र

ब्राह्मी और उसके समानार्थी देवनागरी अक्षर

KOLORS
make life better

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

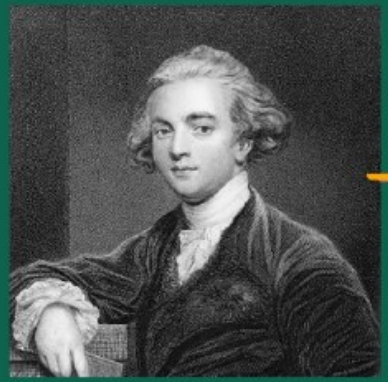





- 18वीं सदी से यूरोपीय विद्वानों ने भारतीय पंडितों की सहायता से आधुनिक बंगाली और देवनागरी लिपि में कई पांडुलिपियों का अध्ययन शुरू किया और उनके अक्षरों की प्राचीन अक्षरों के नमूनों से तुलना शुरू की।
- आरंभिक अभिलेखों का अध्ययन से विद्वानों को कई बार लगा कि ये संस्कृत में लिखे हैं जबकि प्राचीनतम अभिलेख वस्तुतः प्राकृत में थे।
- कई दशकों बाद जेम्स प्रिंसेप ने असोककालीन ब्राह्मी लिपि का 1838 ई. में अर्थ निकाल लिया।

KOLORS
make life better

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

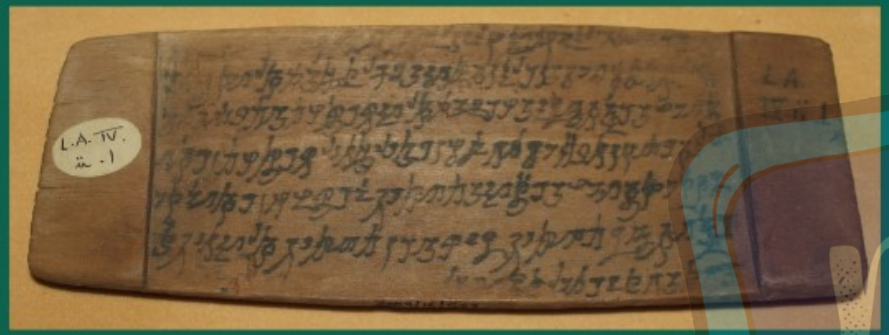

खरोष्ठी लिपि को कैसे पढ़ा गया?

- पश्चिमोत्तर के अभिलेखों में प्रयुक्त खरोष्ठी लिपि के पढ़े जाने की कहानी अलग है।
- इस क्षेत्र में शासन करने वाले हद–यूनानी राजाओं द्वारा बनवाए गए सिक्कों से जानकारी हासिल करने में आसानी हुई है।



हिन्द यूनानी शासक मेनाण्डर का एक सिक्का

Q. जेम्स प्रिंसेप कौन थे? इतिहास लेखन में उनका क्या योगदान रहा?

Q.

KOLORS
make life better

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



- इन सिक्कों में राजाओं के नाम यूनानी और खरोष्ठी में लिखे गए हैं। यूनानी भाषा पढ़ने वाले यूरोपीय विद्वानों ने अक्षरों का मेल किया। जैसे -- अपोलोडोटस के अक्षर 'अ' का मेल किया ।
- प्रिंसेप ने खरोष्ठी में लिखे अभिलेखों की भाषा की पहचान प्राकृत भाषा के रूप में की थी इसलिए लंबे अभिलेखों को पढ़ना सरल हो गया।

अभिलेखों से प्राप्त ऐतिहासिक साक्ष्य:

इतिहासकारों के काम करने के तरीकों का पता लगाने के लिए आइये अशोक के दो अभिलेखों को ध्यान से पढ़े।

KOLORS
make life better

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

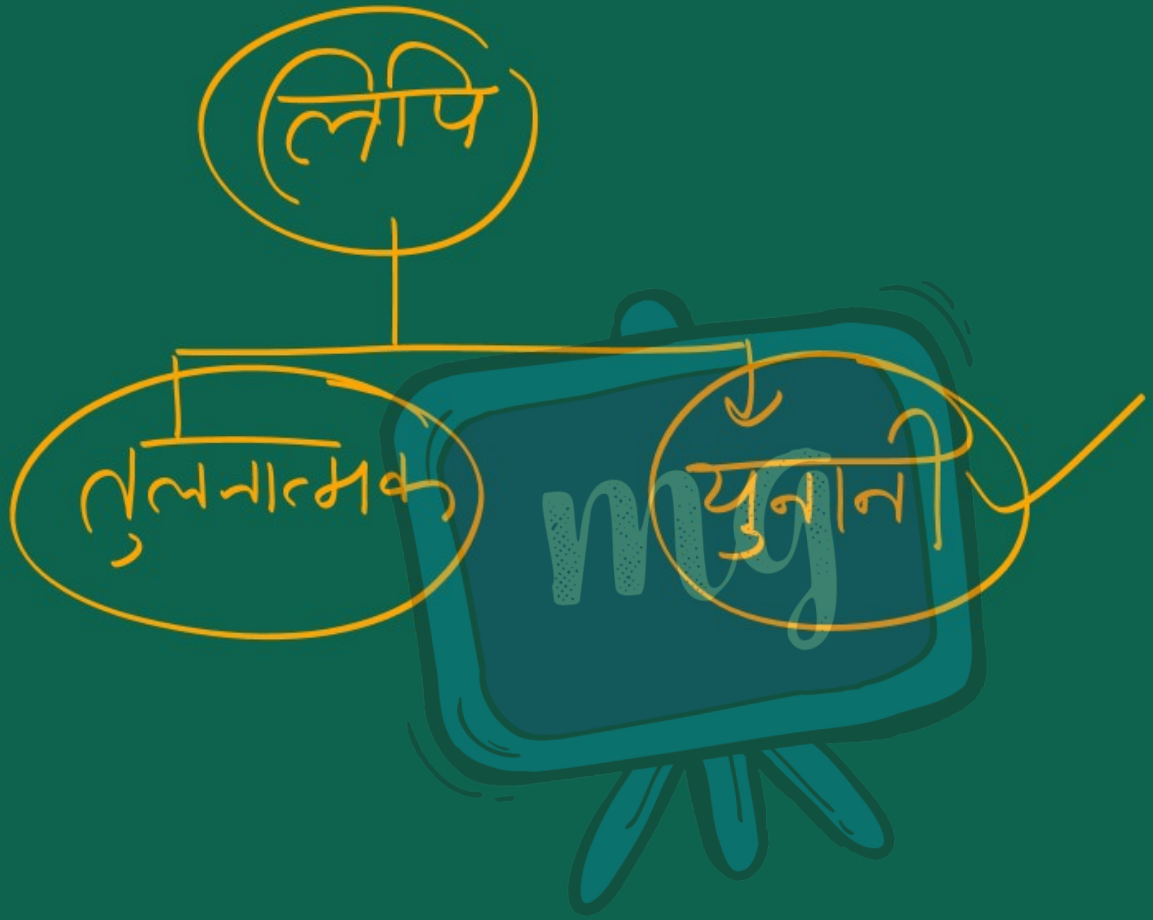

KOLORS
make life better

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



देवताकृत्य
कल्याण
अशोक
सद्धामात्र
धम्म

राजा के आदेश

राजन् देवानांपिय पियदस्सी यह कहते हैं: अतीत में मसलों को निपटाने और नियमित रूप से सूचना एकत्र करने की व्यवस्थएँ नहीं थीं। लेकिन मैंने निम्नलिखित (व्यवस्था) की हैं।

लोगों के समाचार हम तक प्रतिवेदक सदैव पहुँचाएँ। चाहे मैं कहीं भी हूँ, खाना खा रहा हूँ, अन्तःपुर में हूँ, विश्राम कक्ष में हूँ, गोशाले में हूँ, या फिर पालकी में मुझे ले जाया जा रहा हो अथवा वाटिका में हूँ। मैं लोगों के विषयों का निराकरण हर स्थल पर करूँगा।

KOLORS
make life better

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

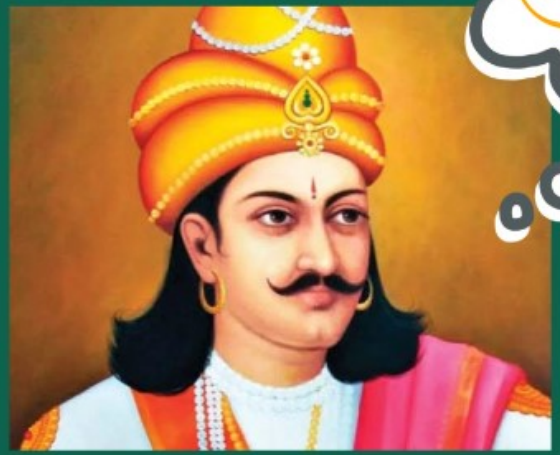

कितना सुंदर है मैं?

देवनम

- इस अभिलेख में असोक का नाम नहीं लिखा है।
- इसमें असोक द्वारा अपनाई गई उपाधियों का प्रयोग किया गया है जैसे कि देवानांपिय अर्थात् देवताओं का प्रिय और 'पियदस्सी' यानी 'देखने में सुन्दर'।
- असोक नाम अन्य अभिलेखों में मिलता है जिसमें उनकी उपाधियाँ भी लिखी हैं।
- इन अभिलेखों का परीक्षण करने के बाद अभिलेखशास्त्रियों ने पता लगाया कि उनके विषय, शैली, भाषा और पुरालिपिविज्ञान सबमें समानता है अतः ये अभिलेख एक ही शासक ने बनवाया होंगे।

KOLORS
make life better

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

- असोक ने अपने अभिलेखों में कहा है कि उनसे पहले के शासकों ने रिपोर्ट एकत्र करने की व्यवस्था नहीं की थी।
- क्या यह असोक का वक्तव्य सही है? इसके लिए इतिहासकारों को बार–बार अभिलेखों के कथनों का परीक्षण करना पड़ता है।
- कुछ शब्द ब्रैकेट में लिखे हैं? अभिलेख शास्त्री प्रायः वाक्यों के अर्थ स्पष्ट करने के लिए ऐसा करते हैं।

KOLORS
make life better

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

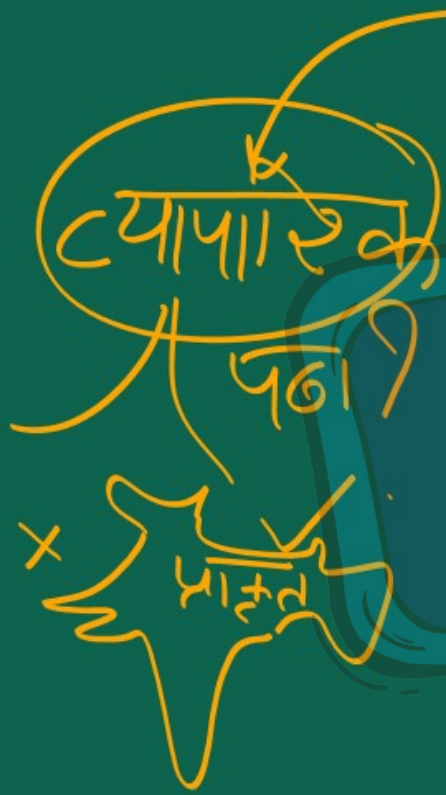

- इतिहासकार इस प्रकार परीक्षण करते हैं कि यदि राजा के आदेश यातायात मार्गों के किनारे और नगरों के पास प्राकृतिक पत्थरों पर उत्कीर्ण थे, तो क्या वहाँ से आने–जाने वाले लोग उन्हें पढ़ने के लिए रुकते थे?
- अधिकांश लोग प्रायः पढ़े–लिखे नहीं थे।
- क्या पाटलिपुत्र में प्रयुक्त प्राकृत उपमहाद्वीप में सभी स्थानों के लोग समझते थे?
- क्या राजा के आदेशों का पालन किया जाता था?
- इन प्रश्नों के उत्तर पाना सदैव कठिन हैं।

KOLORS
make life better

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

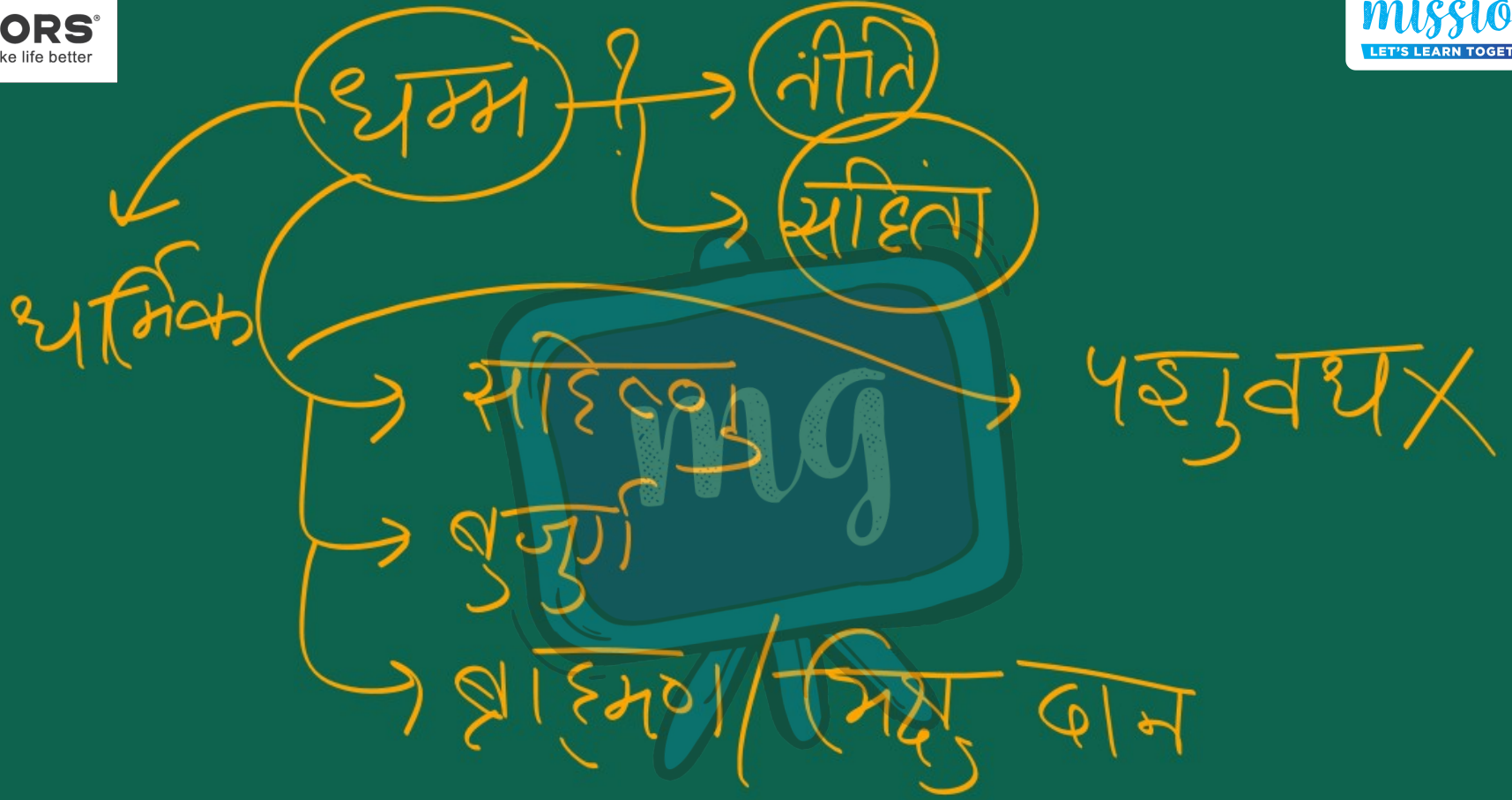

KOLORS
make life better

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

Q. ब्राह्मी लिपि की खोज किस प्रकार हुई?

1. Intro → जेम्स प्रिंसेप
2. Body → प्रक्रिया।
3. अंत →